जिनभाषित २००६ ०८ (फोल्डर नं. ०२४३०८)

सम्पादक – प्रो. रतनचन्द्र जैन

मुख्य टाइटल

साधना स्वर्ग का साधन नहीं, मोक्ष का पथ है – आचार्य श्री विद्यासागरजी

अनुक्रमणिका

संपादकीय – सत्यमेव जयते ----------२
प्रारंभिक प्राच्यविदों की जैनधर्म के इतिहास विषयक भ्रान्तियाँ – स्व. डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन -------- ४
आचार्य कुन्दकुन्द की दृष्टि में श्रमणाभास – स्व. डॉ. लालबहादुरजी शास्त्री ---------- ६
आदर्श श्रावक – प्राचार्य श्री नरेन्द्रप्रकाशजी ---------- ९
छोटे बाबा का बडज़ा काज – डॉ. सुधा मलैया ---------- ११
जिज्ञासा समाधान – पं. रतनलाल बैनाड़ा ---------- २५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org